प्राक्कथन

उपन्यास साहित्य का एक अंग भर है, फिर भी समाज को प्रस्तुत करने का सबसे प्रबल माध्यम भी यही है । इसका सीधा संबंध मानव समुदाय से होता है और इसी संबंध की पृष्ठभूमि में उभरते हैं, समाज विशेष के सांस्कृतिक मूल्य । भारतीय संस्कृति मानव जीवन की अमूल्य धरोहर है। अपनी गौरवमयी सांस्कृतिक परंपरा के कारण ही हजारों हजारों वर्ष तक पराजित रहने के बाद भी भारतीय संस्कृति ने अपनी नींव को बनाए रखा और वह विलुप्त नहीं हुई । समाज में सांस्कृतिक संचेतना बनाए रखने में अनेक संस्थापकों, समाज सुधारकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इनके अथक परिश्रमों के फलस्वरूप आज अनेक नए नियम, कानूनों द्वारा समाज में व्याप्त सामाजिक कुप्रथा पर प्रतिबंध लगाकर निर्योग्यताओं को दूर किया गया है । उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिए गए जिससे समाज में नवीन सांस्कृतिक परिवर्तन आए, खास करके स्त्रियों की स्थिति में । सच कहा जाए तो संस्कृति ही विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक परंपराओं के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व में सांस्कृतिक चेतना पैदा करती है और उसके व्यक्तित्व का विकास करती है । यदि किसी व्यक्ति या समाज की कोई संस्कृति ही ना हो तो वह व्यक्ति या समाज सही तरीके से अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकता है, क्योंकि संस्कृति के अभाव में व्यक्ति या समाज पशुवत होता है । यह संस्कृति ही है जो मानव व्यवहार को नियमित कर उसे संस्कारों से भर देती है।

मुझे अपनी संस्कृति से विशेष मोह रहा है । इसलिए जब मुझे शोध कार्य करने का अवसर मिला तो मैंने इसी विषय को अपना माध्यम बनाया । सांस्कृतिक मूल्यों का पोषण छायावादोत्तर उपन्यासों में अधिक हुआ है । विशेषकर वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास प्रचुर मात्रा में हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को उद्घाटित करते हैं । उनके उपन्यासों में उत्तर वैदिक युग से लेकर 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण तक का इतिहास सिमटा हुआ है । उन्होंने हर उस युग को छुआ है । जिसमें सांस्कृतिक क्षेत्रों में भारत ने अपनी छवि को सजाया-संवारा है । 'भुवन विक्रम' की वैदिक समाज

व्यवस्था, दसवीं- ग्याहरवीं शताब्दी की नृत्य और स्थापत्य कला, 15वीं शताब्दी का शौर्य, 18वीं शताब्दी में 'माधव जी सिंधिया' की देश को अंग्रेजों की आगत समस्या और मुगलों की गिरती साख से बचाने की छटपटाहट, 1857 की क्रांति तथा दुर्गावती के माध्यम से चित्रकला और न्यायप्रियता, अहिल्याबाई के माध्यम से शौर्य न्याय और भक्ति की स्थापना के प्रयास, हमारे परंपरागत मूल्य हैं, जो हमारे सांस्कृतिक आयामों को, उनके विविध पहलुओं के माध्यम से छूते हैं । उनके ये ऐतिहासिक उपन्यास इसलिए और महत्वपूर्ण हो उठे हैं क्योंकि इनमें हमारे उस इतिहास को जिसे अंग्रेजों ने तोड़ मरोड़ कर, अपने स्वार्थ की धूल से धुंधला बनाकर प्रस्तुत किया था, तथ्यात्मक जानकारी के आधार पर सत्य रूप में सामने लाया गया है । उनके सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और कुछ राजनीतिक घटनाओं को आधार बनाकर लिखे गए उपन्यास भी हैं। इन सभी में हमारी सामाजिक परंपराओं और चिंतन धाराओं को एक स्थायी स्वरूप प्रदान किया गया है। एक आदर्श जीवन पद्धति तथा जीवन दर्शन हमें इन कृतियों में निरंतर दिखाई देता है । इसी स्वस्थ सांस्कृतिक परंपरा ने मुझे उनकी कृतियों की ओर आकर्षित किया । जब मैंने लेखक वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों पर काम करने की चर्चा अपनी निर्देशिका आदरणीय डॉ. अनीता शुक्ल से की, तो उन्होंने मेरे इस शोध कार्य मैं अपना योगदान देने की सहर्ष स्वीकृति दे दी, और मैंने अपने शोध प्रबंध का विषय 'सामाजिक - सांस्कृतिक संचेतना के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा- एक अध्ययन' चुना । यूँ तो वर्माजी और उनके उपन्यासों पर अनेकों काम हो चुके है परंतु उनके उपन्यसों में सामाजिक-संस्कृतिक संचेतना के परिप्रेक्ष्य में अब तक विस्तार पूर्वक कोई काम नहीं हुआ हैं । मेरा मुख्य विषय सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा हुआ है । जिस पर मैंने अधिक भार दिया है। सांस्कृतिक संचेतना से मेरा अभिप्राय सांस्कृतिक जागृति से है । सांस्कृतिक जागृति जो प्रेत्येक संस्कृति सेवन विवेकशील मनुष्य की पहचान है । अपनी इसी ज्ञानात्मक मनोवृत्ति का प्रयोग लेखक अपनी सृजनाओं में करता हैं । जब हम किसी लेखक के साहित्य का अध्ययन करते है तब उसकी सांस्कृतिक

अभिव्यक्तियों के साथ तादात्म्य का अनुभव करते है । उसके सांस्कृतिक अनुभवों सा हमारा साधारणीकरण होता है और जब हम इस प्रकार की कृतियों की आलोचना सांस्कृतिक संचेतना के आलोक में करते हैं तब इस प्रकार का अध्ययन सामने आता है । मेरा मुख्य विषय सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा हुआ है जिस पर मैंने अधिक भार दिया है।

वर्मा जी के उपन्यासों में संस्कृति की रक्षा हुई है । संस्कृति के अनेक तत्त्व चित्र उनके उपन्यासों में देखने को मिलते हैं । किस प्रकार लोग धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण त्याग देते है । 'मृगनयनी' उपन्यास में बोधन नामक पात्र इसका प्रमाण है कि धर्म की रक्षा के लिए वह अपने प्राण त्याग देता है परंतु धर्म परिवर्तन नहीं करता । साहित्यकार जब लिखता है तब वह विवेक भी देता है । क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है, यह हमे अतीत से सीखना चाहिए और क्या बुराई को हमें त्याग न चाइए ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अगर इतिहास की कोई पुस्तक या कोई घटना का वर्णन आया है तो उसे मैंने इतिहास की पुस्तक से प्रमाणित किया है । इसमें मैंने मूल शोध की ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग करने के साथ साथ तुलनात्मक शोध प्रणाली भी अपनाई है ।

- **शोध प्रबंध में विषय-वस्तु का विवरण**

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया है, साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में संदर्भ सूची दी है।

प्रथम अध्याय :- समाज एवं सांस्कृतिक संचेतना

प्रथम अध्याय में मैंने समाज और सांस्कृतिक संचेतना का अर्थ समझाकर उसकी विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को लिखा हैं । इसके बाद समाज और संस्कृति पर प्रकाश डाला है। इसी अध्याय में संस्कृति के विभिन्न घटकों पर विस्तार से लिखा गया है। इसके अतिरिक्त इसी अध्याय में मूल्यों की परिभाषा देते

हुए सांस्कृतिक संचेतना के सामाजिक मूल्यों के बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए उनका विवेचन किया गया है। इसी प्रकार से इसी अध्याय में सांस्कृतिक संचेतना के राजनीतिक मूल्यों एवं धार्मिक मूल्यों पर भी प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय :- **सामाजिक - सांस्कृतिक उपन्यासों की पृष्ठभूमि**

द्वितीय अध्याय उपन्यास की पृष्ठभूमि से संबंधित है जिसके अंतर्गत मैंने हिंदी गद्य के विकास पर प्रकाश डालते हुए, हिन्दी गद्य में भारतेन्दु जी एवं द्विवेदी जी के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला है साथ ही इसी अध्याय में हिंदी उपन्यास के विकास पर विस्तार से विवेचना भी की है। जिसके अंतर्गत मैंने उपन्यास का अर्थ, स्वरूप और उसकी विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ लिखी हैं। हिंदी का प्रथम उपन्यास और उसके मतभेद के बारे में बताते हुए, उपन्यासों के विविध प्रकारों पर विस्तार से विवेचन किया है। हिंदी उपन्यास के विकास के विभिन्न चरणों पर विशद रूप से चर्चा करते हुए मैंने उन्हें चार खंडों भारतेंदुयुगीन उपन्यास, द्विवेदी युगीन उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास - में विभक्त किया है। इसके अतिरिक्त उन कालों में आए प्रमुख उपन्यासकारों का नाम सहित संक्षिप्त परिचय भी दिया है ।

तृतीय अध्याय :- **वृन्दावनलाल वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

तृतीय अध्याय को मैंने दो खंडों में विभक्त किया है। पहले खंड में मैंने वर्मा जी के जन्म और परिवार का परिचय देते हुए उनके बचपन, शिक्षा-दीक्षा एवं साहित्य पढ़ने के शौक के बारे में लिखा है। इसके अतिरिक्त वर्मा जी के साहित्य सृजन की प्रवृत्ति पर भी विशद रूप से प्रकाश डाला है। उनके परिवार में साहित्यिक वातावरण तो था ही उनके चाचा अच्छे कवि और लेखक थे। उनसे भी इन्हें साहित्यकार बनने की प्रेरणा मिली। दूसरे खंड में मैंने वर्मा जी के समग्र कृतित्व पर विशेष रूप से चर्चा की है। जिसमें मैंने उनके ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक एवं सामाजिक नाटक, आत्मकथाएं, एकांकी, लोकगीत, गद्य काव्य और काव्य को शामिल किया हैं । इसके अतिरिक्त मैंने उनकी अप्रकाशित रचनाओं पर

भी प्रकाश डाला हैं तथा उनको भारत सरकार द्वारा मिले सम्मानों और पुरस्कारों पर भी चर्चा की हैं ।

चतुर्थ अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में सामाजिक संचेतना की अभिव्यक्ति

चतुर्थ अध्याय इस अध्याय को मैंने सुविधा के लिए चार खंडों में विभक्त किया है सबसे पहले खंड में मैंने वर्मा जी के उपन्यासों में समाज के स्वरूप को विस्तार पूर्वक दर्शाया है। जिसके अंतर्गत मैंने वर्मा जी के उपन्यासों में आए परिवार, जाति, धर्म, वर्ण, जाति, विवाह, दासप्रथा, सतीप्रथा, विधवा प्रथा, अनमेल विवाह आदि सामाजिक, किसानों, गरीब वर्ग ,मध्यम वर्ग, नारी की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। बाकी के तीनों खंड वर्मा जी के उपन्यासों की पृष्टभूमि से संबंधित है। उपन्यासों की कथावस्तु जिस-जिस काल से संबंधित है, उन उपन्यासों को काल सहित उचित वर्गीकरण करके उनमें आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि को परिस्थितियों के अंतर्गत दर्शाया है। आर्थिक पृष्ठभूमि में खेती, उद्योग, व्यापार, राजा की आय के साधन, लगान आयात, निकास, जजिया कर आदि विभिन्न करों के विषय में चर्चा की है। धार्मिक पृष्ठभूमि में विभिन्न देवी-देवता, पूजा-पाठ, कर्मकांड, प्रवचन, विभिन्न धर्म, तीर्थ-यात्रा, शास्त्रार्थ, बलि-प्रथा, अंधविश्वास, टोना टोटका आदि पर चर्चा की है। राजनीतिक उपन्यासों में राजाओं-बादशाहों तथा उनके उत्तराधिकारी, मंत्री, जासूस, देश द्रोही, सेनापति, राजसभा, युध्द, न्याय, पंचायत, दंड, पुरस्कार आदि पर चर्चा की है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की तत्कालीन पृष्ठभूमि पर मैंने प्रमाणों सहित विशद रूप से प्रकाश डाला है एवं उसका ऐतिहासकि पुस्तकों का प्रमाण देते हुए तुलनात्मक प्रणालिका प्रयोग किया है वर्मा जी ने अपने उपन्यासों को जिस पृष्ठभूमि को लेकर लिखा है वह वास्तविक है या नहीं ? किस स्थान या घटना पर उन्होंने कल्पना, जनश्रुतियों का सहारा लिया है उसका मैंने प्रमाणों सहित विवरण दिया है।

पंचम अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक संचेतना

इस अध्याय को मैंने चार खंडों में विभक्त किया है। पहले खंड में मैंने वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों की पृष्ठभूमि के विषय में विस्तार पूर्वक लिखा है। जिसके अंतर्गत मैंने यह बताया है कि उनका कौन-सा उपन्यास किस शताब्दी से संबध्द है और उन्हें अपने प्रत्येक उपन्यासों की सृजन-प्रेरणा कैसे मिली। वर्माजी के कुछ उपन्यास शुध्द ऐतिहासिक हैं और कुछ काल्पनिक तथा कुछ परंपरा और जनश्रुतियों पर आधारित हैं। उनके उपन्यासों की तत्कालीन देशकाल एवं वातावरण की पृष्ठभूमि, उपन्यास में आए स्त्री तथा पुरुष पात्र, स्थान, घटनाएं आदि वास्तविक हैं या काल्पनिक, कौन-सी कथा तथा घटनाएं वास्तविक हैं या जनश्रुतियों तथा परंपराओं पर आधारित हैं आदि का प्रमाण देते हुए उन पर बारीकी से प्रकाश डाला गया है। द्वितीय खंड में वर्मा जी के उपन्यासों में प्रयुक्त संस्कृति पहलुओं का विवेचन किया है। जिसके अंतर्गत मैंने विवाह, धर्म, अंधविश्वास, टोना - टोटका, रीत -रिवाज, तीज-त्यौहार, विभिन्न कलाएँ, लोकगीत, खान-पान, पहनावा, खेलकूद आदि जैसे विभिन्न तत्वों पर उदाहरण सहित प्रकाश डाला है। तृतीय खंड स्वदेश से संबंधित है जिसमें वर्मा जी ने 'अपने' स्वदेश बुन्देलखंड के मोह के प्रति लिखा है तथा बुन्देलखंड के रीति-रिवाज प्रकृति गीत-लोकगीत आदि का वर्णन किया है। चतुर्थ खंड में मैंने राष्ट्र का अर्थ बताकर राष्ट्र की परिभाषा दी है अतः वर्माजी के उपन्यासों में राष्ट्र के प्रति प्रेम-भावना, त्याग- बलिदान, कर्तव्यपालन की भावना, आत्मसमर्पण आदि पर चर्चा की है।

षष्ठ अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का शिल्प

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने शिल्प का शाब्दिक अर्थ तथा शिल्प की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को लिखा है। कथानक में मैंने कथानक का महत्त्व बताकर वर्मा जी के उपन्यासों में आई कथानकों की विशेषताएँ बताइ हैं। पात्र एवं चरित्र चित्रण में वर्मा जी के उपन्यासों में आए मुख्य एवं गौण नारी और

पुरुष पात्रों पर तथा उनके चरित्र-चित्रण पर बारीकी से प्रकाश डाला है। संवाद कौशल को दो भागों में विभक्त किया है पात्र-अनुकूल संवाद और भाव-अनुकूल संवाद। संवाद कौशल के बाद मैंने उद्देश्य के विषय में लिखा है जिसमें वर्माजी ने किस उद्देश्य से ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों को लिखा हैं, उनकी चर्चा की है। इसके अतिरिक्त भाषा शैली के अंतर्गत वर्मा जी के ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, बुन्देली, उर्दू, आदि शब्दों के साथ उनकी भाषा को सरसता प्रदान करने वाले मुहावरे, लोकोक्तियां, सूक्तियां आदि पर विशेष रूप से चर्चा की है। इसके अतिरिक्त वर्मा जी के उपन्यासों में प्रयुक्त लेखन शैली को मैंने चार भागों में विभक्त किया है- वर्णनात्मक शैली, भावात्मक शैली, विचारात्मक शैली एवं हास्य व्यंग्यात्मक शैली। उन पर भी विशद रूप से प्रकाश डाला है।

- **उपसंहार**

उपसंहार के अंतर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय से लेकरषष्ठम अध्याय तक के चिंतन का सार निष्कर्ष रूप में रखा है और वृन्दावनलाल वर्मा जी कृत हिंदी उपन्यासों में रूपायित सामाजिक एवं सांस्कृतिक संचेतना के स्वरूप को गहराई से समझाने का प्रयत्न किया है।

- **संदर्भ-ग्रंथ सूची**

- आधर ग्रंथ
- सहायक ग्रंथ
- वेबसाइट

प्रस्तुत शोध प्रबंध को समाप्त करने में मुझे अनेक संघर्षों से गुजरना पड़ा । अनेक परीक्षाओं देनी पड़ी । मैं अहमेदाबाद शहर में रहती हूँ । मेरे विवाह के 5-6 वर्ष के पूर्व ही मेरे सास-ससुर दोनों का स्वर्गवास हो गया था । मेरी मासी सास ने मेरे पति को पालन पोषण किया और उन्हे कभी माँ कि कमी महसूस नहीं होने दी

। मेरा परिवार काफी अनुशान वाला एवं परंपरावादी है । पति की सिफ़्ट वाली जॉब, बेटी का स्कूल, होम वर्क, पढ़ाई, स्कूल मीटिंग, परीक्षा की तैयारी करवाना, उसे स्कूल छोडना-लेकर आना, बेबी को जन्म देना, पुत्र का पालन-पोषण, समय- समय पर उसे खाना देना, उसे फीडिंग करना, आदि, उसके अतिरिक्त खाना बनाना, खिलना, घर के दैनिक काम-काज, समान लाना, महेमानों का स्वागत करना, किसी का जन्मदिन, विवाह, भजन, गीत आदि शुभ- अशुभ प्रसंगो में जाना, उसे निभना, घर के रीत-रिवाजों परम्पराओं का पालन करना, वर्ष के दिवाली, गौवर्धन पूजा, अन्नकूट, जन्माष्टमी, देव-उठी अग्यारस, नाग पंचमी, संकट चौथ, करवा चौथ, अगोई अष्टमी, श्राद आदि तीज त्यौहारों को रीति-रिवाजों के साथ मानाना, रिसतेदारों को देखना आदि को संभालते हुए यह शोध प्रबंध करना थोड़ा कठिन हो गया था । क्योंकि घर, परिवार, अंदर-बहार की जीमेद्दारियों, सामाजिक एवं संस्कृतिक व्यवहारों को निभाते हुए, समय का अभाव हो गया था, कभी भी अध्ययन करने के लिए 3-4 घंटे से ज्यादा समय मिल ही नहीं पता था और पुत्र के जन्म के कुछ समय बाद वो भी मिलना मुश्किल हो गया था । मुझे लाइब्रेरी या एम.एस. यूनिवेर्सिटी जाने के लिए मेरे पति की नाइट सिफ्ट का इंतजार करना पड़ता था क्योंकि उनकी नाइट सिफ्ट महीने में 8 बार आती थी ।

जब नाइट सिफ्ट आती तब उसी समय दौरान में यूनि. में मेरी गाइड से मुलाक़ात या लाइब्रेयरी में बुक्स ईसु करवाने जाती थी । मेरे पति नोकरी करके सुबह में 9 बजे आते, आकार तुरंत सो जाते थे । वे घर पर ही होते थे तब में मेरी बेटी को टीवी के सामने कार्टून लगाकर, उसका 2-3 टाइम का खाना-पीना डाइनिंग टेबल पर रख कर, दरवाजे पर ताला लगाकर ,10 बजे बदोड़ा यूनिवर्सिटी निकल पड़ती थी तो कभी अहमेदाबाद की विध्यापीठ लाइब्रेयरी में । (तब मेरे बेटे का जन्म नहीं हुआ था) और साम को 7 बजे तक वापस आती । मेरी बेटी को घर पर ताला लगा कर जाने में मुजे काफी दुख होता था पर मेरे पास कोई विकल्प नहीं था । आड़ पड़ोसी को में इतना जानती नहीं थी और आज के जमाने में किसी के हाथों मेरी

बेटी को सोपना मुजे पसंद नही था । मेरी बेटी ने भी मेरा बहोत सहयोग दिया, वह अकेले टीवी देखाती रहती, खेलती, अपने पापा का उठने का इतजार करती, उनके उठने के बाद वह उनके साथ खाना खाती, फिर सो जया करती थी । कभी-कभी एसा दिन भी आया कि मेरे पति गहरी नींद पकड़ लेते थे और वो उठते नही थे । परंतु उसने कभी शिकायत नही की क्योंकि वो इतनी समझदार थी कि उसे पता होता था उसके पापा नाइट करके आए है इसलिए वे आज नही उठे । 2-3 साल तक उसने मेरा इसी प्रकार सहयोग दिया। परंतु बेटे के जन्म के बाद लाइब्रेयरी जाना काफी मुश्किल हो गया था , मुजे सोचना पड़ता था की में कब और कैसे जाऊ । बेटे के जन्म के बाद में एक वर्ष तक कहीं नहीं जा सकी । जा सकती ही नही थी । 1 वर्ष के बाद जब लाइब्रेयरी जाने ने का समय आया तो 'कोरोना' (कोविड 19) जेसी महामारी आ गई जिससे लड़ पाना मेरे लिए क्या पूरे विश्व के लिए समस्या था । एक तरफ पारिवारिक जीवन, एक तरफ कोरोना काल और एक तरफ मेरी पीएचडी । एसा लग रहा था कि मेरा पीएचडी करने का सपना पूरा हो पाएगा कि नहीं । परंतु मैंने हिम्मत नही हारी । नारी को अनेक संघर्षों से गुजरना पड़ता है, अनेक मोर्चों पर खड़ा रहना पड़ता है । पुरुष हर काम नहीं कर सकता । जैसे कि कब क्या करना है कैसे करना है, बच्चों को कितना खाना देंना है, कब देना है, कैसे होमवर्क करवाना है , कितना समान लाना हैं आदि ।

इस सब से गुजरने के लिए मेरे जीवन संघर्षों ने ही मुझे बल दिया । संभवत: मेरे अपने जीवन संघर्षों के कारण ही मेरे द्वारा आलोच्य उपन्यासों के स्त्री पात्रों तथा विरागनाओं के संघर्षों को समझ पाई हूँ कि किस प्रकार उनहोंने अनेक संघर्षों का सामना करते हुए अपने देश का नाम रोशन किया । स्वराज के लिए आखरी सांस तक देश की रक्षा की। विरागनाओं का नाम आते ही मुझे मेरी निर्देशिका डॉ. अनीता शुक्ल जी का नाम याद आ जाता है । वे भी किसी विरागना से कम नहीं है । झाँसी की रानी की भाँति वे भी अपना बेग और गाड़ी की चाबी रूपी हथियार लेकर हर घड़ी संघर्षों का सामना करने के लिए तैयार रहती है । कोई काम आया नहीं कि वो निकली नहीं, अपना काम जब तक पूर्ण नही होता, वे अंत तक वही बनी रहती है । मजाल है की उनके रहते हुए कोई काम टल जाये। पीएचडी के दौरान

मैंने उन्हे भली भाति जाना और पहेचना है । उपर्युक संघर्षों से जब में जुज़ रही थी तब उनहोंने ही मुझे आगे बढ़ ने की प्रेरणा दी । अत: उपर्युक्त अनेकों संघर्षो से गुजरते हुए ईश्वर कि आशिम कृपा से मैंने अपना प्रस्तुत शोध प्रबंध संपूर्ण किया ।

सबसे पहले में अपने माता शशि शर्मा और पिता शिवकुमार शर्मा का धन्यवाद करती हूँ । जिनके स्नेह एवं आशीर्वाद तथा शुभकामनाओं से में यह शिखर तक पहुँच पाई हूँ ।

माता-पिता के पश्चात हमारी संस्कृति में गुरु का महत्व सर्वोपरी है । अंत: में अपनी मार्गदर्शिका आदरणीय डॉ. अनीता शुक्ल जी के प्रति ह्यदयपूर्वक धन्यवाद ज्ञपित करती हूँ । जिनका मुझे कुशल एवं अनुभवी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । उन्होंने विषय निर्वाचन से लेकर समापन तक जो स्नेह और कार्य तत्परता दिखलाई उसी का यह फल है कि मेरा यह शोध प्रबंध पूरा हो सका उनके मार्गदर्शन के अभाव में यह कार्य संभव नहीं था ।

इसके अतिरिक्त बड़ौदा यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के सभी अध्यापकों-अध्यापिकाओं और अनुसंधित्सुओं तथा काला संकाय डीन प्रो. आध्या मेम, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष कल्पना गावली जी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

मेरी यह शोध यात्रा में मेरे पति का भी विशेष योगदान रहा है। जिनका शुक्रिया अदा में तहेदिल से करती हु । उनहोंने न केवल आर्थिक रूपसे सहयोग दिया बल्कि हर कदम पर वे मेरे साथ बने रहे । इस के अतिरिक्त उनहोंने भी निराशा के क्षणों में मेरा होसला बढ़ाया। मेरे शोध कार्य को पूर्णत्व की और ले जाने का श्रेय मेरे पति को जाता है । जिनको में फिर से आभार व्यक्त करती हूँ ।

तदुपरान्त में मेरी प्यारी बेटी विभूति का भी बहुत आभार व्यक्त करती हूँ । जिसने न केवल अपने आप का ध्यान रखा और कभी कभी बेटे आदि को संभाला, विशेषकर जब में ऑनलाइन वेबिनार में जुड़ती थी । और तो और कभी चुप-चाप मम्मी को डिस्टर्ब ना हो उस प्रकार सरप्राइस देते हुए मेरा छोटा मोटा काम

कर लेती थी जैसे की रूम साफ करना, खाना डाइनिंग टेबल तक पाहुचना, लव यू बेटा । में फिर से आभार व्यक्त करती मेरे दोनों बच्चों का जिनका वात्सल्य मेरे अंतर्मन को आगे बढ्ने के लिए प्रेरित करता रहा ।

में मेरी प्यारी बहन श्वेता एवं पिंकी दी, भाभी सालिनी, धारा, निलु ,विधि, गायत्री, आदि को में कैसे भूल सकती हूँ । जिन्होंने मेरी अनुपस्थि में मेरे छोटे बेटे को बड़े ही प्यार एवं वात्सल्य पूर्वक रखा आप सभी को मेरा बहुत बहुत आभार । इसके अतिरिक्त मयंक, आलोक, दक्ष, पंकज जी आदि को भी मेरा बहुत सारा धन्यवाद ।

गुजरात विध्यापीठ, गुजरात यूनिवर्सिटी, हंशा मेहता, सरदार पटेल यूनि. आदि जिन ग्रंथालयों से मुझे समय समय पर आवश्यक पुस्तकें मिली, इन्ही के फलस्वरूप मेरा यह शोध कार्य संपन हुआ है । उन सभी ग्रंथालयों एवं कॉलेजों का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ । मैं उन समस्त विद्वानों एवं लेखकों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी सार्थक एवं सशक्त कृतियों का उपयोग अपने इस शोध कार्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में कर पाई हूँ ।

अतत: उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनका इस महती कार्य में प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग रहा ।

अंत में मैं पुन: अपने शोध निर्देशिका अनीता शुक्ल जी का अंत:करणपूर्वक हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ । मेरी आकांक्षा है कि में हमेशा उनके अपार स्नेह , वात्सल्य एवं प्रेरणा कि भोक्ता बनी रहूँ । जीवन के हर मोड पर आप समान गुरु हर बार मुझे मिले । ऐसी ईश्वर से मेरी प्रार्थना है ।

दिनांक : **विनीत**

अंजना के. मिश्रा